Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 13 अंक 11 | 30 नवम्बर, 2014 | मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

छोटू से सर छोटू राम की कहानी

जन्म दिवस पर विशेष

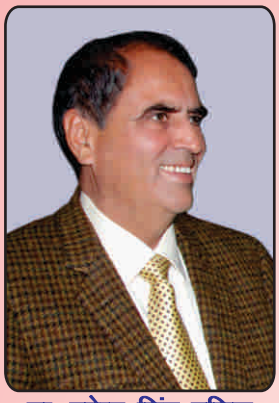

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

इस माया के तीन नाम – परसु, परसा, परसराम। यही है सर छोटू राम का सफ़र। उनका कथन था कि भगवन इतना दीजिए, घट–घट रहे समाए, मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए। लेकिन कृषक समाज इससे भी अधिक दयालू है। खुद भूखा रहकर मानव सेवा में जुटा है। इस समाज की विडंबना है कि इसे बोलते वक्त, वक्त की नजाकत समझ में नहीं आती और दुश्मन की पहचान नहीं कर पाता। इसीलिए इस समाज का कोई वाली–वारिस नहीं रहा लेकिन दीन बंधू सर छोटू राम इनके मरहम को जानते पहचानते थे। उन्होने अपनी मृदुल एवं कुटिल भाषा से इस समाज के कल्याण की सोची और उन्होने आह्वान किया था – ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिलै तनै टूटे जूते, उड़ै मिलेगें बूंट।'' समाज उनके दर्शाए मार्ग पर चलकर आगे तो बढ़ा लेकिन जो प्रगति कर गया उसने समाज से नाता तोड़ लिया। इसी लिए आज भी सब से अधिक पीड़ा इसी समाज के हिस्से आ रही है। आज समाज सर छोटू राम का स्मरण कर उस मार्ग दर्शक की तलाश में है ताकि समाज में जन चेतना आ सके। दीनबंधू का मानना था कि किसान फूल नहीं है, महकना जानता है, लोग खुश होते हैं क्योंकि वह बिना मिले रिश्ते निभाना जानता है।

सत्ता विहिन दल आज स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू करने के पक्षधर बने हुए हैं उनके काल में उन्हे इस लागू करने से किसने रोका था? स्मरण रहे कि इस रिपोर्ट के अनुसार किसान के उत्पाद की कम से कम कमीत तय करने में लागत मुल्य के साथ–साथ पांच प्रतिशत लाभ देने की बजाहत की गई है लेकिन ऐसा करेगा कौन क्योंकि अभी तक एम एस पी तय करने का कोई मान्य फार्मूला नहीं है तथा गेंहू, चावल के इलावा दूसरी फसलों पर वह भी नहीं है। हां, सर छोटू राम आज जिंदा होते तो जब वे काणी डंडी कांणी बाट की प्रथा को खत्म करवा सकते थे तो इस रिपोर्ट को लागू करवाने में कोई कोर कसर ना छोड़ते।

आज एक और ज्वलंत मुद्दा है 'माडीफाईड जनैटिक' का। इस बीज से किसान का उत्पाद दोगुणा हो जाएगा तथा कई प्रकार के कीटों व बीमारियों से फसल सुरक्षित हो सकेगी। इसे नकारने के पीछे तथ्य दिए जा रहे हैं कि इससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लाभ मिलेगा तथा इससे बीमारियां पैदा होगीं जबकि इन फसलों में विटामिन की मात्रा प्रचूर होगी क्योंकि इससे किसान को लाभ होगा इसलिए इसका विरोध हो रहा है।

नई सोच नई तकनीक को अपनाकर ही समाज अपनी जरूरतें पूरी कर सकता है, इसी में सबका भला होगा। दीन बंधु की सोच इस पर पूरी उतरती है अन्यथा आज भाखड़ा डैम ना होता और ऐसा करवाना चाहा तो उनका मजाक उड़ाया गया कि क्या कभी दरिया भी बंधे हैं? आज दरिया भी बंधे हैं और हमारी खेती और घरेलू जरूरतों के लिए बिजली पानी दोनों की व्यवस्था इन्ही बांधों से हो रही है। वे कहते थे ''काम करो कि पहचान बन जाए – कदम चलो कि निशान बन जाए, लोग जिंदगी काट लेते हैं, ऐसे जीयो कि मिशाल बन जाए'' उन्होने अपना जीवन ऐसा जिया कि मिशाल बन गया। दीन बंधु कहते थे कि जो झुकता है वहीं पाता है, बाल्टी झुकती है भरकर निकलती है। बढते चलो काफिला बनता जाएगा।

शेष पेज–2 पर

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 24.01.2015

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 134वीं जयंती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन 24 जनवरी, 2015 को दीनबंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं, खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2014 से दिसंबर 2014 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। अतः वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 01 जनवरी 2015 तक सूचित करें। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 20 दिंसबर 2014 तक भेजें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

'k"k i!t &1

वे चाणज़्य से मुतासिर थे कि काम की पहचान स्वतः बनती है वे किसान को एकजुट करने के लिए जीवन दर्शन दिखाते थे और कहते थे ''हिज़्मतें मर्दा-मदद दे खुदा''।

किसान की विडंबना को उन्होने व्यक्त किया था कि किसान दो ढाई मण खाद्यान्न का बोझा उठा सकता है लेकिन खरीद नहीं सकता - सेठ खाद्यान्न खरीदने की तौफीक रखत है लेकिन खा नहीं सकता। ऐसे में एक सशक्त समाज की संरचना करना उनका ध्येय था तभी तो वे शिक्षा के पक्षधर रहे। किसान की माली हालत आरंभ से ही ऐसी रही है कि अनथक प्रयास के बावजूद वह अपनी दो जून की रोटी के लिए ही जुगाड़ करता रहा है। उसे अच्छा जीवन, कपड़े या जूते कभी ज़्यंसर नहीं होते। इस दर्द को बयां करते हुए उन्होने कहा था - ''जिस खेत से ज़्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के -गोसा-ए-गंदम को जला दो''। हालांकि उसकी साल भर की कमाई को जलाने की उनकी कभी मंशा ना थी बल्कि उसे फसल का उचित मुल्य दिलवाना था।

वैसे तो उनका जन्म 24 नवंबर 1881 का है और यह उनका 133वां जन्म दिवस है लेकिन कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होने अपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था ज़्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान-काश्तकार का पर्व माना जाता है। बसंत पंचमी का दिन देश की तमाम बहादुर सामाजिक संस्थाएं किसान, काश्तकार-कामगार के हितों व कल्याण के लिए सर छोटू राम द्वारा किए गए अथक प्रयासों को स्मरण करने तथा लगातार उपेक्षित हो रहे इस वर्ग को अपने हितों के प्रति जागरूक करने के लिए उनके (सर छोटू राम) कथानुसार बंसत पंचमी उत्सव को किसान दिवस के तौर पर मनाती है। बसंत के मौसम में अपनी फसल में फूल देखकर किसान का चेहरा खिल उठता है और अपनी भूख प्यास भूल नए सपने साकार होने की उमंग कर बैठता है। हालांकि प्रकृति कभी इतनी सरल नहीं रही है कि हर बार उसके सपनों को साकार कर दे लेकिन आशा की किरण ही उस भोले-भाले किसान का जीवन है। किसान की फसल मौसम की मार और मौसम के सहारे ही फलती-फूलती है लेकिन उसके दावेदार कई हो जाते हैं। उसके उत्पाद की कीमत वातानुकूलित कमरों में बैठकर तय होती है जो कभी भी उसकी लागत के बराबर नहीं होती।

आज किसान अपना आलू सड़कों पर फैंक रहे हैं ज़्योंकि करीब 4 रूपये किलो लागत से पैदा होने वाले आलू की कीमत 30 पैसे किलो उसे मिल रही है जबकि आलू से बने चिप्स का 61 ग्राम का पैक़ेट 20 रूपये में यानि 330 रूपये किलो का बिक रहा है जो किसान के साथ धोखा नहीं तो ज़्या है? खाद, बीज, पानी, बिजली, तेल, दवाईयों के दाम हर बार बढ़ते रहते हैं। किसान को दी जाने वाली सज़्सिडी के नाम पर भी भ्रष्टाचार का कोढ़ चिपका हुआ है। खेती उपकरणों से लेकर किसी भी चीज को देख लें उसके दाम बढ़ाकर सज़्सिडी कोई और ही हजम कर जाता है। उसको मिलता है नकली बीज, खाद और दवाईयां वह भी दोगुने दाम पर। फसल ऋण के नाम पर आधुनिक साहूकार (बैंक) भी उसे लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ते। ऋण देने के लिए भी उससे रिश्वत ली जाती है और कई बार तो ऋण के भुगतान का इंद्राज भी नहीं किया जाता। किस्त देने के बावजूद ऋण जस का तस खड़ा रहता है। खाद, सज़्सिडी को लेकर सरकार और खाद उत्पादकों की सांठ-गांठ से किसान त्रस्त हैं। ऐसे हालात में सर छोटूराम के फसल जलाने के फरमान को ब्रह्मअस्त्र के रूप में लेते हुए आंध्र प्रदेश के किसानों ने कृषि छुट्टी का ऐलान किया है ज़्योंकि आमदनी ना होने की वजह से वे खेती नहीं करना चाहते। देश के अन्य हिस्सों में भी हालात अच्छे नहीं हैं।

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में 5 एकड़ से कम जोत वाले किसानों की संज़्या 67 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। आज औसतन किसान परिवार के पास एक से अढाई एकड़ भूमि ही रह गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज 90 प्रतिशत किसान ऋण में दबे हुए है जो कि मुज़्यतः किसान क्रेडिट कार्ड के सहारे गुजारा कर रहे हैं। इसके साथ ही कृषि लागतों में लगातार हो रही वृद्धि, सरकार की कामगार, किसान विरोधी नीतियों व कृषि लागत से पैरावार के कम मुल्यों के कारण किसान की माली हालत दयनीय होती जा रही है। जबकि राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि आज के हालात में 10 एकड़ से कम जोतों पर कृषि करना पूर्णतया घाटे का सौदा बन गया है। इसके बावजूद भी किसान की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किए जा रहे हैं। युरोपियन युनियन अधिक पैदावार होने पर किसानों को फसल छुट्टी की सलाह देती है तथा उसकी फसल भरपाई किसान को युनियन करती है। इसीलिए वहां किसान खुशहाल है। सर छोटू राम ने किसान-मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू-उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है। गत वर्ष पारित किया गया भूमि अधिग्रहण कानून (संशोधित) कुछ सीमा तक किसान हितैषी है जिसके तहत प्राईवेट सैक़्टर के लिए भूमि अधिग्रहण करने के लिए कम से कम 80 प्रतिशत व जनहित कार्यो के लिए किसान की भूमि अधिग्रहण करने हेतू न्यूनतम 70 प्रतिशत भू-स्वामियों की स्वीकृति आवश्यक है। अधिग्रहित भूमि का मुआवजा भी बाजार दर से तीन-चार गुणा ज्यादा रखा गया है लेकिन कुछ स्वार्थी तत्व इस बिल का विरोध करने पर भी उतारू हैं।

खाद्य मंहगाई दर में तेजी से गिरावट आई है। चार वर्ष के नीचले स्तर 1.81 प्रतिशत पर पहुंच गई है जो किसान के साथ मजाक नहीं तो ज़्या है? विभिन्न किस्मों की दालों की कीमत में 30 से 35 प्रतिशत की कमी महशुस की जा रही है लेकिन कहीं टोटा हो तो किसान के पल्ले, मुनाफा हो तो दुकानदार की जेब में। शायर निदा फाजली ने कहा है :-

''पहले हर चीज थी अपनी मगर अब लगता है,अपने ही घर में किसी दूसरे घर के हम हैं।

वक्त के साथ हैं मिट्टी का सफर सदियों तक,किसको मालूम कहां के हैं कहां के हम हैं''।

सरकार के इशारे मात्र और थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो माडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपज़ि केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। एक रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में 6 लाख करोड़ रूपये गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजे गए और हर वर्ष 48 से 63 हजार करोड़ रूपये बाहर गए।

किसान की अथक कोशिसों से पैदा अनाज के भंडारण की भी उचित व्यवस्था आज नहीं हो पा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार आज तक केवल 415 लाख टन खाद्यान्न रखने की ही व्यवस्था है।

चाहे समस्त भेदभाव समाप्त हो चुका हो फिर भी हे नाथ मैं आप का हूँ, न कि आप मेरे। लहर समुद्र की होती है समुद्र लहर का नहीं। –शंकराचार्य

करीब 190 लाख टन अनाज मात्र पन्नियों से ढ़का है। हर वर्ष 58 हजार करोड़ रूपये का अनाज, फल तथा सब्ज़ियां बर्बाद होने की बात सरकार ने स्वंय मानी है जबकि गरीब भूख से मर रहा है और किसान विपरीत नीतियों की मार झेलते हुए आत्महत्या करने पर विवश हैं। सरकार भावी चुनावों के मद्देनजर लोकलुभानी नीतियां बना रही है जो किसी हालत में पूर्ण ना होने की आज से ही आशंका है। अर्थशास्त्री सरकार के दबाव में अपनी ही नीतियों में उलझे नजर आते हैं। हाल ही में सुरक्षा विधेयक तो पारित हो गया। इसके अनुसार देश की 63 प्रतिशत आबादी को सस्ते दाम पर अनाज उपलज़्ध होगा यानि 3 रूपये किलो चावल, 2 रूपये किलो गेहूं तथा एक रूपये किलो मोटा अनाज दिया जाएगा यानि कि 27663 करोड़ रूपये अतिरिक्त सब्ज़िसडी से कुल खाद्य सब्ज़िसडी 95 हजार करोड़ रूपये हो जाएगी। गेहूं-चावल की समर्थन मूल्य से यह राशी और बढ़ेगी। ज़्या सरकार कर पाएगी? करदाता और पिसेगा और कालाधन और बढ़ेगा।

आज राजनैतिक दल सज़ा प्राप्ति के लिए मुद्दों की बजाए जाति-धर्म का भेदभाव फैला रहे हैं। सर छोटू राम हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। मुस्लिम लीग पंजाब में युनियनिष्ट पार्टी को खत्म करने के लिए प्रयास करती रही और देश विरोधी ताकतों को मजहब के नाम पर बांटने की कोशिश करती रही। वर्ष 1944 में उन्होने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर अब फैसलाबाद में मुल्लाओं और डिप्टी कमीश्नर के विरोध के बावजूद एक बड़ी रैली करने में सफलता हासिल की। इस रैली में 50,000 के करीब लोगों ने हिस्सा लिया। सर छोटू राम उस वक्त तो इसे टाल गए लेकिन राष्ट्र विरोधी ताकते एक अलग इस्लामिक देश - पाकिस्तान के गठन में कामयाब हो गई और राष्ट्र का विभाजन 1947 में हो गया। राष्ट्रभक्तों का मानना है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो राष्ट्र का बंटवारा न होता। चौधरी साहब बहुत ही स्पष्ट शज़्दों में कहते थे ''हम मौत पंसद करते हैं, विभाजन नहीं।'' वे मजहब के नाम पर बने इस इस्लामिक राज्य पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिदूंओं तथा सिज़्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है।

सर छोटू राम ने किसान के बेटे की शिक्षा के उपर विशेष बल दिया ताकि वह अपना जीवन सुधार सके और पढ़ लिखकर कहीं नौकरी कर घर की माली हालत सुधार सके। इसके साथ ही वे स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि महिला शिक्षा व महिलाओं के आत्म सज़्मान व सुरक्षा के बिना कोई भी राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता लेकिन आज सब कुछ विपरीत हो रहा है। महिलाओं के विरूद्ध लगातार बढ़ रहे अत्याचारों व दुराचार की घटनाओं से समस्त महिला वर्ग की सुरक्षा दाव पर लगी है लेकिन नेतागण अपनी कुर्सी बनाए रखने में लगे हैं। उन्होने जाट गजटीयर पत्रिका का प्रकाशन कर किसान मजदूर वर्ग के लिए शिक्षा का अभियान चलाया तथा शिक्षा के प्रसार के लिए गुरूकुल और जाट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करवाई।

सर छोटूराम की चौमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में देखना-समझना है। जब तक उनकी विचारधारा युवा वर्ग में पूर्णतया जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्ण स्वराज भारत में नहीं आ सकता। लेखक ने कई बार वर्तमान पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ जो कि उस समय लाहौर में स्थित थी, के अंदर सर छोटूराम चेयर स्थापित करने के लिए प्रदेश सरकार व प्रशासन को पत्र लिखे हैं ताकि किसानी पर आधुनिक तकनीक के शोध हों जो किसानों की दशा सुधारने में कारगर हो सकें लेकिन अभी तक इस विषय में कुछ नहीं किया गया है। भाग्य की विडंबना है कि उनकी मातृभूमि हरियाणा प्रदेश व पंजाब में तकरीबन 50 से भी अधिक सरकारी व गैर सरकारी महाविद्यालय हैं और इनमें लगभग 4-5 कृषि विश्वविद्यालय भी हैं लेकिन किसी भी विश्वविद्यालय में दीन बंधु सर छोटू की चेयर स्थापित नहीं की गई है। अब इस दिशा में कुछ उज़्मीद की जा सकती है ज़्योंकि वर्तमान केंद्रीय सरकार में उनके दोहते ग्रामीण विकास व पंचायती राज मंत्री बन गए हैं जो कि इस संदर्भ में वांछित कार्यवाही करवा सकते हैं। आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वज़क होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्राधार बने।

आज हुकमरानों द्वारा विशेष आर्थिक जोन (एस ई जैड) के नाम पर किसान की भूमि औने-पौने भाव पर खरीद कर बड़े घरानों को सौंपी जा रही है जबकि दीन बंधु सर छोटू राम ने किसान कामगार के अस्ज़िव को बनाए रखने के लिए अपने मंत्री कार्यकाल के दौरान लाहौर में किसान कोष की स्थापना की थी और वे अपने वेतन से गरीब व जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए वजीफा व आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। उनके द्वारा उच्च शिक्षा हेतू आर्थिक सहायता प्राप्त कर्ता पाकिस्तान के एकमात्र नोबेल लाईरेट महरूम अज़्दुस कलाम ने एक पुरूष्कार समारोह में कहा था कि अगर सर छोटू राम ना होते तो आज अज़्दुस कलाम का कोई वजूद ना होता। किसान के हित के लिए वकालत करते हुए सर छोटू राम वायसराय तक से भिड़ गए। उन्होने कहा था - ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' गरीब-मजदूर-मजलूम-किसान की लड़ाई लड़ते वे भगवान को प्यारे हो गए और आज किसान रो-रो कर सर छोटू राम को पुकार रहा है - ऐ चांद(दीनबंधु) बता दे तुम बिन तारों (किसानों) का ज़्या होगा, तुम तो छोड़ गए हम सारों (गरीब मजदूरों) का ज़्या होगा?

आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वज़क होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्राधार बने। अतः आज संपूर्ण किसान-मजदूर वर्ग पुकार रहा है कि कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, उसके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसज़ा संपन्नता को कायम रखने के लिए फि र से एक दीन बंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनका ग्रामीण समाज, किसान, कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का स्वप्न साकार हो सके ।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

जो व्यक्ति दूसरों की सहायता में तत्पर रहते हैं, उनके कष्ट स्वतः ही दूर हो जाते है। – चाणक्य

न्यायधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया पर प्रश्न चिन्ह?

डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया

हाल ही, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायधीश और प्रेस परिषद के अध्यक्ष मार्कण्डेय काटजू ने एक आरोपी वरिष्ठ जज की पदोन्नति के मामले का खुलासा करके उच्च न्यायपालिका की साख और न्यायिक स्वायत्तता के नाम पर सृजित ''कॉलेजियम व्यवस्था'' की निष्पक्षता पर सवाल उठाया है। काटजू के मुताबिक मद्रास उच्च न्यायालय के एक अतिरिक्त न्यायाधीश के भ्रष्टाचार के बारे में जानकारी होने के बावजूद उन्हें स्थाई किया गया। न्यायमूर्ति काटजू द्वारा शुरू की गई बहस न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की अनदेखी होने के साथ ही न्यायिक नियुक्तियों के लिए बनाए गए ''कॉलेजियम व्यवस्था'' की प्रासंगिकता पर भी सवाल उठाती है। पूर्व में भी, सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्टों में जजों की नियुक्ति को लेकर विवाद खड़े होते रहे हैं। 18 अगस्त, 2011 को जब राज्य सभा ने कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस सौमित्र सेन के खिलाफ भारी बहुमत से महाभियोग पारित किया, तब बहस के दौरान अधिकतर सांसद ''कॉलेजियम की व्यवस्था'' के खिलाफ थे। सैन की नियुक्ति ''कॉलेजियम सिस्टम'' के तहत ही हुई थी। दुर्भाग्यवश कुछ न्यायधीशों की सत्यनिष्ठा पर अंगुली उठी और कुछ मामलों में न्यायधीशों की भूमिका सार्वजनिक तौर पर सवालों के घेरे में रही। ऐसे माहौल में ''कॉलेजियम सिस्टम'' की साख पर भी अंगुली उठी। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि ''कॉलेजियम सिस्टम'' के बावजूद न्यायधीशों की सत्यनिष्ठा पर गंभीर आरोप लग रहे हों, तो उस पर पुनर्विचार क्यों न किया जाए।

ज्ञातव्य है कि 1993 से पूर्व हाईकोर्टों के चीफ जस्टिस, राज्यों के मुख्यमंत्री की सलाह के बाद तय नाम सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को भेजते थे। ये नाम केंद्रीय कानून मंत्रालय के जरिये प्रधानमंत्री तक जाते थे। फिर इन्हें राष्ट्रपति के पास भेजा जाता था। यानी जजों के चयन में राज्य और केंद्र सरकारों का हस्तक्षेप था। 1993 से व्यवस्था बदली, जिससे राजनीतिक दखल खत्म हुआ। वर्ष 1993 में सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायाधीशों की नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में लेते हुए कहा था कि न्यायाधीश न्यायिक परिवार के हिस्सा होते हैं। इसलिए उनकी नियुक्ति और स्थानांतरण से संबन्धित मामलों में निर्णय लेने का अधिकार न्यायालय के पास होना चाहिए। 1993 में सुप्रीम कोर्ट की नौ सदस्यीय एक खंडपीठ ने यह अधिकार अपने हाथ में लेने की शुरुआत कर दी। फिर 1998 में इतने ही जजों की खंडपीठ ने राष्ट्रपति के एक संदर्भ पत्र के जवाब में नियुक्ति के तंत्र का खाका भी तय कर दिया। तय हुआ कि प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता में वरिष्ठतम जजों का कॉलेजियम होगा, जो नई नियुक्तियों के लिए सरकार से नामों की सिफारिश करेगा। इसमें सरकार के पास यह विकल्प जरूर रखा गया कि वह चाहे, तो किसी नाम को खारिज कर दे। लेकिन, यदि कॉलेजियम दोबारा उस नाम को प्रस्तावित करे, तो उसे सरकार खारिज नहीं कर सकती। पिछले डेढ़ दशक से यही व्यवस्था चल रही है। लेकिन, समय–समय पर इस पर सवाल भी खड़े होते रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यही है कि जज ही जजों की नियुक्ति क्यों करें? ऐसा प्रावधान संविधान तक में नहीं है, फिर भी न्यायपालिका ने अपने दो फैसलों के जरिये ही नियुक्ति का अधिकार अपने नाम कर लिया। क्या यह न्यायसंगत है?

यक्ष प्रश्न है कि क्या वर्तमान ''जज द्वारा नियुक्ति–प्रक्रिया'' से, न्याय–प्रणाली में गुणात्मक या मात्रात्मक या परिणामात्मक सुधार हुआ है? आज भी, न्याय पाना, न सुगम है, न सस्ता है, न त्वरित है। देरी से न्याय तो न्याय को नकारना ही है। ''डीलेड जस्टिस इज नो जस्टिस।'' गरीब के लिए तो न्याय पाने की प्रक्रिया बहुत जटिल और खर्चीली है। जज बनाना अपने हाथ, फिर भी यह हालात। प्रश्न यह भी है कि क्या जजों की चयन की कॉलेजियम प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि संदिग्ध नैतिकता के व्यक्ति न चुनें जाएं? क्या यह चयन निष्पक्ष एवं पारदर्शी होता है ? पूर्व चीफ जस्टिस एमएन वेंकटचलैंया की अध्यक्षता में गठित समिति ने भी सरकार को सुझाव दिया था कि नियुक्ति प्रक्रिया पर पुनर्विचार हो और एक नया तंत्र विकसित हो, एक नया सिस्टम बने। विधि विशेषज्ञ मानते हैं कि ''कॉलेजियम'' में मनमानी और पक्षपात की पूरी गुंजाइश है। जस्टिस ए.पी. शाह (पूर्व मुख्य न्यायाधीश, दिल्ली हाईकोर्ट) के अनुसार, जजों की नियुक्ति ही न्यायिक सुधार की पहली सीढ़ी है। कॉलेजियम सिस्टम में चयन कोई मापदंड नहीं है। इसलिए एक स्वतंत्र आयोग बनाया जाए, जो सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जजों के लिए बेहतर चयन की सिफारिश सरकार को करे। कुछ तो पैमाने तय हों।' जस्टिस वी आर कृष्णा अय्यर कहते हैं, 'कॉलेजियम के कई सदस्य खुद ही प्रशिक्षित नहीं हैं। वे सिर्फ सीनियर होने के नाते नियुक्तियों के अधिकारी हैं।' संसद की स्थायी समिति ने भी नियुक्ति प्रक्रिया में बदलाव की सिफारिश की है।

प्रश्न यह भी है कि क्या 'कॉलेजियम सिस्टम' से न्यायपालिका में शुचिता के क्षरण को रोका जा सका है ? भ्रष्टाचार के आरोप में कई जज कुर्सियां गंवा चुके हैं। यह हाल तब है जब पिछले 20 साल से सीनियर जज ही जजों को चुन रहे हैं। ज्ञातव्य है कि पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री शांति भूषण ने यह कहकर चौंकाया था कि सुप्रीम कोर्ट के 16 पूर्व मुख्य न्यायाधीशों में से आठ पूरी तरह भ्रष्ट थे। छह को ईमानदार बताते हुए उन्होंने बाकी दो के बारे में 'कुछ कहने' से इंकार कर दिया था। देश की सबसे बड़ी अदालत की सबसे ऊंची कुर्सी पर रहे जजों पर यह पहली सख्त टिप्पणी थी। जस्टिस सेन और जस्टिस दिनाकरन के मामलों ने यह साबित किया है कि गड़बड़ियों का दायरा दूर तक फैला है। चीफ जस्टिस रहते ए.एम. अहमदी की वकील बेटी को हासिल खास तवज्जों विवादों में रही। तब बार कौंसिल ने इसका तीखा विरोध किया। जस्टिस वाय.के. सभरवाल विवादों के चलते ही मानवाधिकार आयोग में आने से वंचित रहे। जस्टिस वी. रामास्वामी (पंजाब–हरियाणा हाईकोर्ट) भ्रष्टाचार के मामले में महाभियोग का सामना करने वाले पहले जज बने। जस्टिस अरूण मदान (राजस्थान हाईकोर्ट) को यौनाचार व आर्थिक अनियमितता के आरोप में इस्तीफा देना पड़ा। जस्टिस शामित मुखर्जी (दिल्ली हाईकोर्ट) को 2008 में, डी.डी.ए. के भूमि घोटाले में, पद छोड़ना पड़ा। जस्टिस निर्मल यादव (पंजाब–हरियाणा हाईकोर्ट) को अगस्त 2008 में नकद 15 लाख रुपए भेजे गए थे। सुप्रीम कोर्ट की कमेटी, सीबीआई व पुलिस की जांच के बाद सीबीआई की स्पेशल कोर्ट में

ईर्ष्या अग्नि है, परन्तु अग्नि का गुण उसमें नहीं है, वह हृदय को फैलाने के बदले और भी संकीर्ण कर देती है।

मामला लंबित है। उपरोक्त कतिपय दागी न्यायाधीशों के शर्मनाक दुराचरण ''कॉलेजियम–सिस्टम'' को दागदार बनाने के लिए काफी हैं।

पूर्व में कॉलेजियम सिस्टम की पैरवी करने वाले कानूनविद् फली एस. नरीमन भी अब बदलाव के पक्षधर हैं। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के ज्यादातर पूर्व जज नियुक्ति प्रक्रिया के लिये एक स्वतंत्र राष्ट्रीय न्यायिक आयोग, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के नुमाइंदे और विषय विशेषज्ञ शामिल हों, के गठन के पक्ष में हैं। यह आयोग ही अपने समक्ष आने वाले आवेदनों में से हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों के नाम तय करे और नियुक्ति की सिफारिशें सरकार को दे। आवेदकों की काबिलियत और अनुभव की गहन जांच–पड़ताल के साथ चयन की प्रक्रिया पारदर्शी हो।

निःसंदेह, नियुक्ति प्रक्रिया में बदलाव ही विकल्प है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एसएच कपाड़िया का कहना है, 'ईमानदार जजों को न्यायिक आयोग या ज्युडिशियल अकाउंटेबिलिटी बिल से डरने की जरूरत नहीं। इससे भी कड़े सिस्टम की जरूरत है। स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है, जजों की ईमानदारी।' परंतु, ''कॉलेजियम सिस्टम'' में पक्षपात और मनमानी की भरपूर गुंजाईश है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के 70 फीसदी जज सीनियर वकीलों में से चुने जाते हैं और 30 फीसदी निचली अदालतों से प्रमोशन के जरिये। बीते वर्षों में पदों से हटने वाले जस्टिस शामित मुखर्जी और जस्टिस अरूण मदान से लेकर जस्टिस सौमित्र सेन केस में, विशेषज्ञ मानते हैं कि चयन के दौरान इन जजों से जुड़े अहम और जरूरी तथ्यों की अनदेखी हुई है।

कॉलेजियम सिस्टम गोपनीयता के अंधेरे में काम करता है, जबकि जजों की नियुक्ति और पदोन्नति की प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी बनाने की जरूरत है। जजों की नियुक्ति को सुधार की पहली सीढ़ी बताते हुए विशेषज्ञों की राय है कि आयोग के जरिये ही सुधार मुमकिन होगा। जजों की नियुक्तियों के लिये किसी आयोग का गठन संविधान में संशोधन के बगैर नामुमकिन है। 2003 में, तत्कालीन एनडीए सरकार ने संविधान के 98वें संशोधन बिल के जरिये राष्ट्रीय आयोग बनाने की पहल की थी, लेकिन संबंधित विधेयक पारित नहीं कराया जा सका। अब मोदी सरकार ने न्यायिक नियुक्ति आयोग गठित करने का इरादा व्यक्त किया है। आयोग के गठन के मुद्दे पर विधि मंत्री रविशंकर प्रसाद ने विचार–विमर्श के लिए न्यायविदों के साथ एक बैठक की। बैठक में अधिकांश न्यायविदों ने इस बात पर सहमति जताई कि कॉलेजियम प्रणाली की जगह वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए, लेकिन साथ ही, यह भी कहा कि जो भी नई व्यवस्था बने, उसमें निर्णायक भूमिका न्यायपालिका के ही सदस्यों की रहनी चाहिए। उनकी राय से दो बातें साफ होती हैं। पहली तो यह कि वर्तमान कॉलेजियम प्रणाली पूर्ण रूप से उपयुक्त नहीं है, और दूसरी बात यह कि उन्हें संदेह है कि इस प्रणाली को बदलने के नाम पर जजों की नियुक्ति में कहीं कार्यपालिका की दखलंदाजी का रास्ता न खुल जाए। बहरहाल, कॉलेजियम प्रणाली की विदाई होती दिख रही है और न्यायिक सुधार की नई राह खुल रही है। लेकिन, नियुक्ति की नई व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच किसी तरह के भ्रम और टकराव की स्थिति न बने और न ही अपारदर्शी व्यवस्था हो।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 21.3.1987),27/5'4" MBA Marketing, B.Sc. Home science Employed as Zonal Manager in MNC Chandigarh. Father Bank Employee in Chandigarh. Mother Govt. Employee (VRS), Avoid Gotras: Kalarowne, Sahota, Makadae, Cont.: 09915484181, 09501049281
- SM4 Jat Girl (DOB 24.9.1990),24/5'5" B. Com., M. com Pursuing B.Ed., Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran, Cont.: 08284050424
- SM4 Jat Girl,25/5'5" B.Sc. MCA, M. Sc Physics from MDU Rohtak. HTAT cleared. Preparing for NET. Working as Contact Lecturer in Campus School at MDU Rohtak., Father retired from Army. Mother Teacher. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Nara, Cont.: 09417388777
- SM4 Jat Girl, 26/5'2" M.Sc. (Microbiology), Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula, Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan, Cont.: 08146082832
- SM4 Jat Girl, 26/5'2" J.B.T, B.sc B.Ed., M.Sc Math Hons., CTAT, HTAT cleared., Avoid Gotras: Malik, Dabas, Antil, Cont.: 08527417406, 08527417408, 09417405603
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA, Employed as Junior Consultant in Central Govt. on contract basis., Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE), Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl 28/5'4" B. Com. (Hons.) C.C.W.A. JIB, CIB, Working as Accountant in K. K. Associates Chandigarh., Preferred from Chandigarh, Panchkula, Mohali, Avoid Gotras: Dahiya, Nandal, Doon, Cont.: 09501421574
- SM4 Jat Girl 22/5'4" M. Com, Employed in Government job., Avoid Gotra: Khatkar, Nain, Bathu, Cont.: 09417037860
- SM4 Jat Girl 26.6/5'3" M.Sc. Chemistry, B.Ed., Working as Chemistry Lecturer in Haryana Govt. at Panchkula., Preferred in Try City. Avoid Gotra: Nandal, Hooda, Lakra, Cont.: 09915805679
- SM4 Boy 26/5'8" B. Tech. MBA, Working as Junior Manager in SML ISUZU Co. Delhi, with Rs. 6 Lac package PA., Avoid Gotra: Malik, Mor, Sandhu, Cont.: 08872856484
- SM4 Boy 27/5'9" B. Tech, Working in MNC at NOIDA, Avoid Gotra: Bajar, Nandal, Sehwag, Cont.: 09814160596
- SM4 Boy 28/5'11" B.Tech (Electronics), Working in MNC at NOIDA, Avoid Gotra: Tanwar, Jakhar, Sheoran, Cont.: 08284050424
- SM4 Boy 28/5'8" B.Tech (Only Son), Working in MNC at Mumbai with Rs. 12 Lac package PA., Avoid Gotra: Nandal, Hooda, Lakra, Cont.: 09915805679

कवि और चित्रकार मैं भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का रंग भरता है। – अज्ञात

हरियाणा में जाट सत्ता का सूर्य अस्त

राकेश सरोहा

हरियाणा विधानसभा के चुनावी परिणाम आने के पश्चात जाट बहुल इस प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का फूल खिल चुका है तथा 18 वर्षों तक सत्ता का केंद्र बिंदु रहे जाटों की सत्ता का सूर्य अस्त हो गया है। इन चुनावों के पश्चात भारतीय जनता पार्टी ने प्रथम बार सत्ता प्राप्ति के पश्चात प्रदेश की बागडोर श्री मनोहर लाल खट्टर को सौंपी है जोकि पंजाबी समुदाय से संबंध रखते हैं तथा स्वच्छ तथा इमानदार छवि के व्यक्ति है। प्रदेश वासियों को उनसे काफी उम्मीदें है श्री मनोहर लाल को संघ परिवार के आर्शीवाद से प्रदेश का नेतृत्व संभालने का अवसर मिला है। श्री खट्टर प्रथम बार विधायक बने है तथा उन्हें इससे पूर्व सरकार चलाने का या सरकार में कार्य करने का कोई अनुभव नहीं है। प्रदेश को कुशल नेतृत्व प्रदान करना, प्रदेश का समान तथा तीव्र गति से विकास करना, सत्ता में जातिय संतुलन बिठाना, प्रदेश में भ्रष्टाचार व नौकरियों में भेदभाव समाप्त करना तथा प्रदेश की जनता की उम्मीदों पर खरा उतरना उनके सामने प्रमुख चुनौतियां है। यह समय बतायेगा कि वह इन चुनौतियों को निपटाने में कितना सफल होंगे। हरियाणा विधानसभा के अक्तूबर 2014 के चुनाव परिणाम जहां भारतीय जनता पार्टी के लिए अत्यंत सफल तथा उत्साह वर्धक रहे है वहीं ये चुनाव परिणाम कांग्रेस पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय लोकदल, तथा हरियाणा जनहित कांग्रेस पार्टी के लिए अत्यंत निराशाजनक रहे हैं। 90 सदस्यी विधानसभा में विभिन्न दलों की स्थिति इस प्रकार रही है। भारतीय जनता पार्टी 47 सीट, कांग्रेस पार्टी 15 सीट, इनेलो + अकाली दल = 20 सीट, हरियाणा जनहित कांग्रेस पार्टी – 2 सीट, बहुजन समाज पार्टी 1 सीट, आजाद प्रत्याक्षी – 5 सीट। इस प्रकार इन चुनाव परिणामों की समीक्षा करे तो इस विधानसभा चुनावों में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रदर्शन के प्रमुख कारण ये रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी : भाजपा को 2009 के विधानसभा चुनावों में मात्र 4 सीटों पर विजय प्राप्त हुई थी तथा 2014 के चुनावों में उसे 47 सीटों पर विजय प्राप्त हुई है। इस प्रकार इन चुनावों में प्रथम बार भारतीय जनता पार्टी ने शानदार सफलता प्राप्त करके सत्ता प्राप्ति की है। भाजपा की इस शानदार सफलता के प्रमुख कारण ये रहे हैं–

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रदेश में 10 चुनावी सभायें करके चुनावी माहौल भाजपा के पक्ष में बनाने में प्रमुख तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
2. प्रदेश की जनता पूर्ववर्ती सरकारों के कार्यों से निराश थी इसलिए उसने नरेंद्र मोदी में आस्था जताते हुए भाजपा के पक्ष में मतदान किया।
3. डेरा सच्चा सौदा द्वारा भाजपा के पक्ष में समर्थन जारी करने से भाजपा को काफी लाभ प्राप्त हुआ।
4. मीडिया द्वारा इस चुनाव में जाट बनाम गैर जाट का मुद्दा प्रमुखता से प्रचारित किया गया। जिसके कारण गैरजाट जातियों के मतदाता भाजपा के पक्ष में लामबंद हो गये जो कि भाजपा की जीत का प्रमुख कारण रहा।

कांग्रेस पार्टी : कांग्रेस को 2009 के विधानसभा चुनावों में 40 सीटें प्राप्त हुई थीं जबकि इस बार उसे मात्र 15 सीटों पर विजय प्राप्त हुई है इस प्रकार इस बार इस पार्टी का प्रदेश न अत्यंत निराशजनक तथा गिरावट वाला रहा है। कांग्रेस पार्टी के इन चुनावों में निराशजनक प्रदर्शन के प्रमुख कारण ये रहे हैं–

1. मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा कांग्रेस को एकजुट रखने में असफल रहे। जिसके कारण मुख्यमंत्री तथा उनके सांसद पुत्र दीपेंद्र हुड्डा को छोड़कर किसी भी कांग्रेसी नेता ने इन चुनावों में मेहनत नहीं की जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस की करारी हार हुई।
2. मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा से मतभेद के चलते बहुत से कद्दावर कांग्रेसीनेता कांग्रेस पार्टी छोड़कर चले गये जिसका नुकसान कांग्रेस को उठाना पड़ा।
3. कांग्रेस सरकार में सभी क्षेत्रों तथा जातियों का समान विकास ना होना भी कांग्रेस को महंगा पड़ा।
4. कर्मचारियों को पंजाब की तर्ज पर वेतनमान ना देना तथा इसे समय पर लागू ना करना भी कांग्रेस के लिए नुकसानदायक रहा।
5. पूर्ववर्ती केंद्रीय कांग्रेस सरकार की रही गलत नीतियां भी प्रदेश कांग्रेस पार्टी की हार का कारण बनी।

इंडियन नेशनल लोकदल पार्टी : इनेलो को 2009 के विधानसभा चुनावों में 31+1 = 32 सीटों पर जीत प्राप्त हुई थी। इस बार मात्र 20 सीटों पर विजय मिली है। इस प्रकार इस पार्टी का प्रदर्शन लगातार कमजोर होता जा रहा है। जोकि इनेलो के भविष्य के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है। इन चुनावों में इनेलो के कमजोर तथा निराशाजनक प्रदर्शन के प्रमुख कारण ये रहे हैं–

1. इनेलो प्रमुख चौ. ओम प्रकाश चौटाला तथा कद्दावर नेता अजय चौटाला का सजायाफता होना इनेलो के लिए भारी नुकसानदायक रहा है।
2. इनेलो नेताओं का अति उत्साही होना भी इनेलो के लिए नुकसानदायक रहा है।
3. मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार की स्पष्ट दावेदारी का ना होना भी इनेलो के लिए नुकसानदायक रहा है।
4. इनेलो कार्यकर्ताओं की आक्रामक छवि भी इनेलो के लिए नुकसानदायक रही है।
5. चौ. ओम प्रकाश चौटाला का चुनाव प्रचार करना आम मतदाता को पसंद नहीं आया।

हरियाणा जनहित कांग्रेस : हजकां को 2009 के विधानसभा चुनावों में 6 सीट प्राप्त हुई थी जबकि इस चुनाव में मात्र 2 सीटें प्राप्त हुई हैं। जिसके कारण भविष्य में इस पार्टी का अस्तित्व समाप्त होने का खतरा है। इन चुनावों में हजकां सुप्रीमों कुलदीप बिश्नोई तथा उनकी पत्नी ही चुनाव जीतने में कामयाब हुए हैं। हजकां की हार का प्रमुख कारण श्री कुलदीप बिश्नोई का अति महत्वाकांक्षी होना, हजकां के पास मजबूत उम्मीदवारों का ना होना तथा अंतिम समय में हजकां + भाजपा का गठबंधन टूटने का रहा है।

इस प्रकार इन चुनावों में भाजपा को छोड़कर बाकी सभी राजनीतिक दलों का प्रदर्शन पहले से कमजोर तथा निराशाजनक कहा जा सकता है। जाट समाज के दृष्टिकोण से भी ये चुनाव

परिणाम उत्साहवर्धक नहीं है। 18 वर्ष तक प्रदेश का मुख्यमंत्री जाट समाज से था जोकि जाटों के लिए गौरव की बात थी परन्तु इन चुनावों में जाटमतों का विभाजन होने से जाट सत्ता के केन्द्र बिन्दु से दूर हो गये। जिसके परिणाम जाटों को भविष्य में भुगतने पड़ सकते हैं। इस विधानसभा चुनावों में 90 सदस्यों में से 27 प्रतिनिधि जाट समुदाय से हैं। कांग्रेस पार्टी को मिली 15 में से 9 सीटों पर जाट प्रतिनिधि, इनैलो को मिली 19 में से 8 सीटों पर जाट प्रतिनिधि, भाजपा की 47 में से 7 सीटों पर जाट प्रतिनिधि ा तथा 2 निर्दलीय जाट प्रतिनिधि विजय हुए हैं।

27. जाट प्रतिनिधियों का विवरण इस प्रकार हैं :–

1. श्री जसविन्द्र सिंह सन्धू – इनैलो की टिकट पर पिहोवा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के श्री जयभगवान शर्मा को 9347 मतों से हराकर निर्वाचित हुए है ये इससे पूर्व इनैलों के शासन काल में कृषि मंत्री रह चुके हैं। 2. श्री जय प्रकाश – ये कलायत विध ाानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री रामपाल माजरा को 8390 मतों से हराकर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में निर्वचित हुए हैं। इससे पूर्व ये कई बार विधायक तथा सांसद रह चुके हैं। 3. श्री रणदीप सुर्जेवाला – कैथल विधानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री कैलाश भगत को 23675 मतों से पराजित कर कांग्रेस की टिकट पर विधायक बने हैं। इससे पूर्व हुडा सरकार में 10 वर्षों तक मंत्री रहे। 4. श्री बख्शीश सिंह विर्क – असन्ध विधानसभा क्षेत्र से बसपा के श्री बीरेन्द्र मराठा को 4608 मतों से हराकर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक बने हैं। 5. श्री महिपाल ढ़ांडा – पानीपत ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय श्री धर्म सिंह को 36132 मतों से हराकर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक बने हैं। 6. श्री जयतीर्थ दहिया– राई विधानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री इन्द्रजीत दहिया को मात्र 3 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। 7. श्री जगवीर मलिक– गोहाना विधानसभा क्षेत्र से इनैलों के श्री के.सी. बांगड को 3228 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। 8. श्रीकृष्ण हुडा – बरोदा विधानसभा क्षेत्र से इनैलों के डा. कपूर सिंह नरवाल को 5183 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये। इससे पूर्व कई बार विधायक रह चुके हैं। 9. श्री परमिन्द्र ढूल – जुलाना विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के श्री धमेन्द्र ढूल को 22806 मतों से हराकर इनैलो की टिकट पर लगातार दूसरी बार विधायक चुने गये हैं। 10. श्री जसबीर देशवाल – सफीदों विधानसभा क्षेत्र से भाजपा की वंदना शर्मा को 1442 मतों से हराकर प्रथम बार आजाद प्रत्याक्षी के रूप में विधायक चुने गये हैं। गौरतलब है कि वंदना शर्मा केन्द्रीय मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज की बहन हैं। 11. प्रेमलता सिंह – प्रेमलता चौधरी विरेन्द्र सिंह की धर्मपत्नी है तथा उचाना कलां विधानसभा क्षेत्र से इनैलो नेता दुष्यंत चौटाला पौत्र ओम प्रकाश चौटाला को 7480 मतों से हराकर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुनी गई है। 12. श्री सुभाष बराला – टोहाना विधानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री निशान सिंह को 6906 मतों से हराकर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 13. श्री बलवान दौलतपूरिया – फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र से हजकां के श्री दुडाराम को 3505 मतों से हराकर इनैलो की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 14. श्रीमती नैना चौटाला – डबवाली विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के श्री कमलवीर सिंह को 8545 मतों से हराकर इनैलो की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुनी गई हैं। 15. श्री अभय सिंह चौटला – ऐलनाबाद विधापसभा क्षेत्र से भाजपा के श्री पवन बैनीवाल को 11539 मतों से हराकर इनैलो की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। याद रहे कि श्री अभय सिंह चौटाला इससे पूर्व 2 बार विधायक रह चुके हैं तथा इस बार इनैलो के मुख्यामंत्री पद के प्रमुख दावेदार थे। 16. कैप्टन अभिमन्यू सिन्धू – नारनौद विधानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री राजसिंह मोर को 5883 मतों से पराजित कर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं भाजपा के प्रमुख जाट नेता है तथा भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता रह चुके हैं। 17. श्री ओम प्रकाश – लोहारू विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के जे.पी. दलाल को 2095 मतों से पराजित कर इनैलो की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 18. श्री सुखविन्द्र श्योराण – बाढडा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के ही सोमवीर को 1610 मतों से हराकर इनैलो की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 20. किरण चौधरी – तोशाम विधानसभा क्षेत्र से इनैलो की कमला रानी को 19741 मतों से पराजित कर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुनी गयी है। हुडा सरकार के कार्यकाल में मंत्री रही है। 21. आनन्द सिंह दागी – महम विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के श्री शमशेर खरकड़ा को 8158 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर लगातार तीसरी बार विध ाायक चुने गये हैं। 22. चौ. भूपेन्द्र सिंह हुडा – किलोई विधानसभा क्षेत्र से इनैलो के श्री सतीश नान्दल को 47185 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। पिछले 10 वर्ष से हरियाणा के मुख्यामंत्री रहे हैं। 23. श्री ओम प्रकाश धनखड़ – बादली विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याक्षी श्री कुलदीप वत्स को 9266 मतों से हराकर भाजपा की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 24. डा. रधुवीर सिंह – बेरी विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याक्षी श्री चतर सिंह को 4493 मतों से हराकर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। पहले भी कई बार विधायक रह चुके हैं। 25. श्री केहर सिंह रावत – हथीन विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के चौ. हर्ष कुमार को 6372 मतों से पराजित कर इनैलो की टिकट पर प्रथम बार विधायक चुने गये हैं। 26. श्री करण सिंह दलाल – पलवल विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के दीपक मंगला को 5642 मतों से पराजित कर कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गये हैं। दो बार पहले भी पलवल से विधायक रह चुके है। 27. श्री रविन्द्र मछरोली – समालखां क्षेत्र से काग्रेंस के श्री धर्म सिंह को 20373 मतों से हराकर आजाद प्रत्याक्षी के रूप में विधायक बने हैं।

इस प्रकार हरियाणा विधानसभा के चुनाव परिणामों से स्पष्ट है कि जाट मतों का विभाजन होने के कारण जाट सत्ता से परे चल गये है। सत्ता का जाटों के हाथ से जाना भविष्य में जाटों के सामने कई चुनौतियां प्रस्तुत कर सकता है। जिसके लिए आवश्यक है कि समस्त जाट संगठित होकर आपसी मतभेदों को भूलाकर अपने तथा जाट समाज के हित में नीतिगत योजना बनाये तथा अपने असली विरोधियों की पहचान करके उनसे संगठित होकर मुकाबला करे जिसके लिये समस्त जाटों को अपने–अपने अंहकार का त्याग करके संगठित होकर कार्य करने की आवश्यकता है। यदि ठोकर खाकर भी जाट संगठित नहीं होते है तो जाट विरोधी मानसिकता रखने वाली शक्तियां जाटों को सदैव के लिए सत्ता से दूर कर देगी जिसका परिणाम हमारी आने वाली पीढ़ियों को उठाना पडेगा भारत के अन्य प्रदेशों, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली में जाट पहले ही राजनीति के हाशिये पर जा चुके है।

धैर्य

नरेंद्र आहुजा विवेक

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक गुण है जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है। वेद भगवान ने भी अधीरता और क्रोध को त्याग कर धैर्यवान सहनशील बनने का आदेश देते हुए "अहमस्मि महमानः।" अथर्व 12/1/54 अरे मैं तो अत्यंत धैर्यवान सहनशील हूं। अत्यंत विपरीत या विषम परिस्थिति में भी सामंजस्य बैठाकर समभाव बनाकर मुस्कराते रहना ही धैर्यवान होना कहलाता है।

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन का गीता का ज्ञान देते समय भी योगियों के लिए स्थितप्रज्ञ होकर धैर्यवान होना एक आवश्यक लक्षण बताया है। जो सुख में इतराय नहीं विपत्ति में घबराय नहीं और प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में समभाव बना रह कर उस स्थिति का सामना करे वही धैर्यवान जीवन में सफलता पा सकता है। जो व्यक्ति सुख के समय उसके अभिमान में इतरा गया उसका सुख क्षणिक होता है और यदि विपत्ति के समय घबरा गया तो वह मुसीबत पहाड़ बन जाती है और व्यक्ति उस कष्ट में टूट जाता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षण लिखते समय धैर्य को धर्म का लक्षण बताया और वेद भगवान ने भी धैर्यवान, सहनशील होने का आदेश दिया।

गुरु वशिष्ठ ने धैर्य का सुंदर उदाहरण देते हुए कहा "राज्याभिषेक के लिए बुलाये गए और वन के लिए विदा किए गए मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के मुख के आकार में कोई अंतर नहीं देखा" इसे कहते हैं धैर्य। योगेश्वर कृष्ण पर कैसे कैसे संकट आए कंस के अत्याचार जरासंध के प्रहार, शिशुपाल के दुर्वचन परंतु वह सच्चे योगी की भांति सदैव शांत भाव से मुस्कराते रहे। आधुनिक काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद पर ईंट पत्थर फैंके गए, अनेकों बार विष दिया गया, लांछन लगाए गए परंतु वह सब कुछ सहते हुए अत्यंत धैर्य के साथ मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे। शायद यही धैर्य ही इन सभी में वह समान गुण था जिसके कारण वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे और अपने कार्यों विचारों से अमर होकर हम सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर गए।

धैर्यवान सहनशील व्यक्ति के लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं ऐसा कहते हुए नीति शास्त्र में सुंदर वर्णन किया है "जिसके हृदय में जल के समान शीतल समुद्र छोटी सी नदी सा, मेरू पर्वत पत्थर के खंड समान, सिंह हिरण के समान, सर्प पुष्पों का हार और विष अमृत के समान हो जाता है। शांत रहने और धैर्य रखने से व्यक्ति हर कठिनाई पर विजय पा सकता है इसीलिए कहा गया अच्छे श्रोता बनो धैर्य से सुनो लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है। धैर्य सब प्रसन्नताओं व शक्तियों का मूल तत्व है जिसके पास धैर्य संयम सहनशीलता है वह जो इच्छा करे प्राप्त कर सकता है। धैर्य को कमजोरी या मजबूरी समझने वाले मूर्ख होते हैं सहनशीलता तो वीरता का गुण है। अधीर जल्दबाज मनुष्य मुंह के बल गिर पड़ते हैं जबकि धैर्यवान सदा लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करते हैं। धैर्य संयम का रास्ता दर्द से भरा होता है परंतु उसकी मंजिल सदैव सुखदायी होती है। धैर्य और संतुष्टि जीवन नौका की वह पतवारें हैं जो उसे भव सागर के हर भंवर से निकाल कर मंजिल तक ले जाती हैं। विचारों के कारण उपस्थित होने पर भी जिसके मन में विकार उत्पन्न नहीं होते वह धैर्यवान है। धैर्य और मेहनत से वह कुछ पाया जा सकता है जो शक्ति और शीघ्रता से नहीं मिल सकता। इसीलिए हम मनुष्यों को धर्म के लक्षण, वेद के आदेश ओर मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धैर्य संयम सहनशीलता को अपने जीवन में धारण करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के सदस्यों के मेधावी छात्रों एवं उत्कृष्ट खिलाड़ियों को पुरस्कार

जाट सभा चंडीगढ़ के सदस्यों के जिन बच्चों ने बोर्ड एवं युनिवर्सिटी की परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं तथा अन्य निम्न प्रतियोगी परीक्षाओं में योग्यता के आधार पर (बिना अनुदान) प्रवेश प्राप्त किया है, ऐसे बच्चों को जाट सभी द्वारा पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लिए परीक्षा तथा प्राप्त अंक प्रतिशत निम्न प्रकार से होगा।

आठवीं एवं दसवीं	85 प्रतिशत या अधिक
बाहरवीं (आर्ट्स एवं कार्मस) बी.एत्र, बी.कॉम.	75 प्रतिशत या अधिक
एम.ए., एम.कॉम, एल.एल.बी., एल.एल.एम.	75 प्रतिशत या अधिक
बारहवीं (साइंस ग्रुप)	85 प्रतिशत या अधिक
बी.एस.सी., एम.एस.सी.	85 प्रतिशत या अधिक

(अतिरिक्त विषय के तौर पर पास किया गया Math का विषय साइंस ग्रुप के मान्य होगा) IIM, IIT, AIIMS, REC, Chandigarh/ Rohtak/C.B.S.E. Medical College, Punjab Engineering College/Chandigarh College of Architecture, Chd. इत्यादि प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश के लिए। उपरोक्त के अलावा, जिन सदस्यों या जिन बच्चों ने 01 जनवरी, 2014 से 31 दिसंबर 2014 तक खेल प्रतियोगिताओं में राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, व द्वितीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है, ऐसे सभी मेधावी छात्रों एवं उत्कृष्ट खिलाड़ियों से अनुरोध है कि वे वर्ष 2014 की परीक्षाओं में उपर्युक्त अंकों के सर्टिफिकेट/खेलों के सर्टिफिकेट 01 जनवरी, 2015 तक जाट सभा के कार्यालय में जमा करवा दें ताकि उनको सर छोटू राम जयंती, दिनांक 24 जनवरी, 2015 के अवसर पर सम्मानित किया जा सके।

अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी होती है जितना बुरा अपवित्र कर्म हेाता है। – विवेकानन्द

बचा लो अपनी भावी पीढ़ी को, नशे की लत से

cãnÜk R;kxh

नशा उन भंयकर ला–ईलाज बिमारियों की तरह है जिनसे समय रहते बचाया तो जा सकता है किन्तु जो एक बार नशे की लत का शिकार हो जता है तो उसे बिमारी से बचाया लगभग असंभव ही है, अतः अपने बच्चों के नशे की लत लगने से पहले ही इससे होने वाली हानि के बारे में समझकर उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।

हमारे ामज में नशे की शुरूआत प्रायः तम्बाकू के सेवन से होती है जबकि तम्बाकू एक भयानक विष है। यह एक ऐसा ऐसा विषैला पौधा है जिसमें निकोटिन, कोलतार, कार्बन–मोनोक्साईड जैसे घातक विष तततवों की माफी मात्रा रहती है। इन विषों की थोड़ी सी मात्रा भी रक्तचाप, खांसी, दमा व मधुमेह सरीखे भयंकर रोग पैदा करने के कारण बन जाती है। मुंह से बदबू आने लगती है। यदि कच्ची उम्र में बच्चे धुम्रपान करने लगे तो उनकी शरीरिक बढ़ौतरी रूक जाती है। बच्चे नाटे व दुबले रह जाते है। उनका जीवन एक पशु की तरह रह जाता है। उनके दिमाग में इज्जत–बेइज्जती, लाभ–हानि व अच्छा–बुरा सोचने की क्षमता भी घट जाती है।

एक सर्वेक्षण के दौरान यह तथ्य सामने आया कि आमतौर पर घर–परिवार में जब कोई बच्चा बड़ों की देखा–देखी, बीड़ी सिगरेट कर अुकड़ा उठाकर, परने का प्रयास करता है तो प्रायः यही कहा जाता है कि ^^cVk chMh er ihA vHkh r NkVk gA ;g rj ihu dh ph t ugh gA** लोग इसे मामूली घटना समझकर ध्यान ही नहीं देते किन्तु जरूरत है यह समझने कि की ऐसा कहकर उन्होंने जाने–अनजाने में बच्चे को शिक्षा दे डाली? सच यह है कि ऐसा कहने वरले बच्चों को गुमराह करते हैं, उनकी इस लापरवाही के कारण बच्चों के मन यह बात बैठ है कि ''बीड़ी या सिगरेट पीना बच्चों के लिए बुरा है किन्तु बड़े लोगों के लिए कोई बुराई नहीं है।'' परिणाम होता है कि बच्चाअपने मन में यह सपने पालने लगता है कि बड़ा होकर उसे भी सिगरेट पीने का अधिकार मिल जायेगा। उसकी यह सोच उसे मौका मिलते ही बीड़ी सिगरेट पीने के लिए उकसाती है और घरवालों को इस बात की जानकारी तब होती है जब बच्चा जाने अन्जाने तम्बाकू की लत शिकार हो चुका होता है।

rEckdi&efDr di fy, tgkn t:jh

नशे के विरूद्ध जेहाद जरूरी है तो शुरूआत तम्बाकू के सेवन को रोकने से ही होगी। क्योंकि जब भी कोई व्यक्ति बीड़ी या सिगरेट पीता है तो हर कश के साथ वे अपने फेफड़ों को घायल करता है तथा अपने दिल पर चोट पंहुचाता है किन्तु आदतों का गुलाम होन के कारण उसे पता ही नहीं चलता कि वह अपने शरीर को कितनी हानि पंहुचा रहा है। यह विचारना होगा कि तम्बाकू ऐसी क्या चीज है जिसकी पूरे विश्व में भर्त्सना की जा रही है, धर्म में आस्था रखने वाले विभिन्न साधू–संतों, गुरूओं, समजसेवकों ने अपने–अपने तरीके से इसके सेवन को गलत बताया है। श्री गुरू गोबिन्दसिंह जी ने तो तम्बाकू को ''जगत झूठ'' की संज्ञा दी है तथा मनुष्यों के लिए इसके सेवन को महापाप बतलाया है।

तम्बाकू से बने पदार्थों पर यह वैधानिक चेतावनी लिखा जाना कानूनी जरूरी है कि ''तम्बाकू का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।'' विचार करने की बात यही है कि इतना कुछ होने पर भी इसका चलन बढ़ता ही जा रहा है तथा इसके बढ़ते प्रचलन को देखकर ''विश्व स्वास्थ्य संगठन'' भी चिंतित है। इसलिए हर वर्ष 31 मई को ''विश्व तम्बाकू रहित दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। अखिर तम्बाकू जैसे कोढ़ से संसार को मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है? सारांश यह है कि यदि समाज के सभी व्यक्ति इन छोटी–छोओी बातों पर विचार कर लें तो हम अपनी आने वाली पीढ़ी को नशे की लत से बचाने में पूरी तरह कामयाब हो सकते हैं।

---

ge ftu ij xo g

Ranvir Punia s/o Sh. Virender Punia, Grandson of Sh. Jai Pal Singh, Punia, HFS, Divisional Forest Officer (Rtd.), of class 3rd of "The sky World School", Sector 21, Panchkula Bags International Rank 1 in Cyber Olympiad held by S.O.F (Science Olympiad Foundation). This exam is conducted among 19 countries. Ranvir has competed with 19 countries' students and now became world topper in cyber Olympiad after bagging first international Rank.

SIX MONTHS OF MODI GOVERNMENT

By R.N. Malik

Many articles appeared in the press commenting on the performance of NDA Govt. (read Modi Sarkar) soon after it completed 100 days in the office on 6th Sept., 2014. The general consensus was that the new Govt. performed better than UPA - II but otherwise, gave below par performance considering the poor state of economy and the expectation level of the people. Still 100 days period was considered too short to judge the performance accurately. But you cannot forward the same argument now as six months is a reasonably long period (26-11-2014) to rightly judge the present and predict the future performance of the government.

Let me underline 12 good decisions taken by Modi Govt. during the last 6 months though hardly few of these are really earth shaking or great game changer.

1) Disciplining Ministers and the bureaucracy.
2) Substitution of Planning Commission with a new broad based body (It is yet to be formed).
3) Increasing the FDI limit in Railways, Insurance and Defense sectors.
4) Cosmetic reforms in labor laws.
5) Clearing purchase proposals of Defense equipment worth Rs.80,000 crore.
6) Wooing investors from Japan and US with a catchy slogan "Red carpet and not red tape awaits you".
7) Launching Swachh Bharat Abhiyan.
8) Constituting SIT to bring back money stashed in foreign banks. (It may prove to be a damp squib)
9) Decontrolling diesel prices (It may boomrang once international prices of crude oil start rising up again).
10) Efforts to rationalize MNREGA and Food Security Bill.
11) Marginal increase in Railway fares.
12) Adarsh Gram Yojna by MPs.

Besides this, Mr. Arun Jatily, the Finance Minister, has planned a slew of reforms in the financial sector (including rolling out GST) and also simplify the Land Acquisition Act. Mr. Piyush Goyal, the Minister for Power and Coal claims to mine one billion tons of coal per year by the year 2019. How he will achieve this almost impossible target is never explained. His Ministry is also planning to develop 1.0 lac MW of solar power by 2019.

UPA-II was booted out of power because people were fed-up with the policy paralysis, total erosion of PM authority and intense stink of corruption scandals. Accordingly, people became crazy for Narendra Modi to make him the next PM because of his image as an achiever built around his orchestrated performance in Gujarat State as Chief Minister for three terms and the rest is history.

Now the same people, particularly the youth, have started showing gradual disenchantment with Modi government because of his unconventional style of functioning as Prime Minister. They had voted for BJP not out of commitment to its ideology but out of fondness for Mr. Modi thus creating the Modi wave like the Indira wave in 1971, Rajiv Gandhi wave in 1984 and VP Singh wave in 1989 elections (All these three waves subsided very soon and none of the PM could get the second term). But unlike in the past, the voters this time are more aspirational, transactional and unforgiving. Their main expectation is the opening of flood gates for employment opportunities for unemployed youths. If Modi Govt. continues its below par performance for another six months or so, they will not hesitate to burn the effigy of his government as well. Accordingly, Govt. should take a call on the expectations of the youth brigade very seriously.

Factually, it is easier to become the Prime Minister than to run the prime-ministership with aplomb. Unfortunately, except Nehru, none of the Indian Prime Ministers in the past could leave behind the footprint of his legacy in the field of economic development and come out with flying colours. Let us hope, Mr. Modi proves an exception to this observation. He does lack the basic knowledge of good economics (read good politics) but excels in oratorical skills, marketing, self-promotion (like Kejriwal) and orchestration of achievements. BJP spent huge amount (Rs.600 crore) in extolling the Modi campaign during the recent Lok-Sabha elections. PM should have prevented the costly coronation ceremonies of the two Chief Ministers of Haryana and Maharastra and avoided going there. As a matter of fact, the PM is overused as a star campaigner in the Assembly elections and also inaugurating or laying the foundation stones of not so important projects. A wing of BJP is continuously working for organizing PM rallies in foreign countries and the next in line is the project to organize a rally of one lac people in Wembley Stadium in London to give him the rock star-status. There is an audible murmur in the media that PM is keen to grow in national and international stature through self-promotion (He rarely takes the foreign minister with him in his overseas tours) and there is growing concentration of powers in the PMO and the PM is emulating the Chinese President Xi Xinping about whom The Economist titled its recent issue as "Xi Must be Obeyed by All".

Mr. Narender Modi talked endlessly about replicating Gujarat model at the national scale in his pre-election speeches. Gujarat is ahead of other states only in respect of gas exploration and providing 24 hours electricity and water supply. Otherwise; the state is as bad or as good as any other state of India. You will be astonished to see the crumbling infrastructure and low level of insanitation in industrial estates of Ahmadabad and other places. Ruling India is a different ball game than ruling Gujarat state

The most burning problems throttling the progress of the country and agitating the minds of the people are as below:

1. Poor state of the State and National economies (fiscal deficit, current account deficit, bad loans and empty treasuries).
2. Poor GDP growth.
3. Heavy bill of oil import (Rs. 10 lac crore per year or 7% of GDP) and lope sided exploration of oil in new areas particularly in Rajasthan.

4. Low level coal production by Coal India Limited (CIL) to feed new thermal power plants. Presently it is the severest crisis in the energy scenario.
5. Extremely low utilization of solar energy.
6. Rising population as Time Bomb.
7. Insanitation, dehumanizing poverty, slums, poor health services in five Bemaroo states.
8. Low level investment in infrastructure projects.
9. Ungovernable size of many states.
10. Poor financial health of railways.
11. Total lack of horticulture and dairy development in seven N-E states.
12. Poor service delivery from existing infrastructure. The death of 11 women during family planning operations in Chhattisgarh State on 11/11/2014 is the most notable example of this fact.
13. Heavy bank debts on States and their power corporations / utilities,
14. Bleeding of Air India and other Airlines,
15. Very slow development of hydro power and water resources in 14 major river basins of India.

The new government has not spoken a bit on any of these burning issues so far. This silence for six long months is frustrating and it appears that Mr. Narender Modi is either ignorant of these problems or groping in the darkness and the bureaucracy does not show him the beacon light.

The first job of an able Prime Minister is to set clear goals for his Govt. and draw blueprints of a precise road map of economic development and read out the same before the nation. He has to tell in chronological order what his priorities are! (Three upper most goals should be to raise GDP Growth to 10%, beat China in the economic race and total eradication of poverty by 2025). The second step should be to call a meeting of the state Chief Ministers and discuss with them various prose and cones of the road map and set out targets for fulfillment in a time bound manner. The Third important step should be to prepare a financial model and calibrate a strategy for fulfilling the targets both by the states and the Central Govt. For example, the PM may set a target of 100% sewerage system in all the cities/towns by Oct. 2019. Thereafter it is the duty of the Central Govt. to help the states to arrange necessary funds (ADB or World Bank loans) for timely execution of the projects. But strangely the PM has not called even a single meeting of the state Chief Ministers so far. By now, this process should have been over and a bold and solid N-point program should have been prepared and adopted as the National Programme like the earlier 20-point programme of Ms. Indira Gandhi in 1975. He must realize two things:

i) Most of the policy initiatives will be implemented by the state. That is why, Clean India campaign has gone directionless because of non-involvement of States.

ii) Financial emaciations of states will act as backwaters for achieving overall strength of the nation. States like Himachal Pradesh, Punjab and West Bengal are even unable to make timely payments to their employees.

Therefore, a wise Prime Minister has to be a team leader both for his Cabinet colleagues and the state Chief Ministers and the present aloofness towards states does not auger well for promising a vibrant economy.

Governance during the first 200 days indicates that there is total adhocism in the working of Central Govt. and decisions are taken in a huff. Jan-Dhan-Yojna provides one such example. Dismantling the Planning Commission without creating an alternative body is another. There is no indication that the PM has deliberated with his cabinet colleagues or party hierarchy or officialdom any of the 15 burning issues mentioned earlier. Resultantly, the common man is feeling that the nation is not moving ahead and "Achhe Din" are far way and it is more interested in making Congress Mukt rather than Garibi Mukt Bharat. The only consolation is that 2G type scandals may not occur in future under the new regime. In other words, the environment of economic aggression has not been built up in the country so far and fire in the belly is missing.

It appears that this Govt. will continue with business as usual style like UPA-II. The only difference between the two can be "In UPA-II, the Prime Minister was reticent and the Ministers were too vocal. Now, the PM is more rhetoric and the Ministers are quiet." Mr. D. Raja of CPI is right when he says "Mere rhetorics and sloganeering will not work for long with this Govt". Opposition parties will be very happy to see that Modi Govt. fails on all fronts so that they can regrow.

Therefore, the PM must realize now that Indian economy is in shambles and it requires good deal of hard work to remove the tag of India being an under-developed country. The country needs an economic renaissance which requires calibration of highly strategic economic planning and execution of projects with war footing approach (Unfortunately, India is also surrounded by two hostile neighbors). Present Indian situation existed in China in 1975 when Deng Xiaoping took over. Now look where is China and where India stands! Obviously, Indian Govt. must analyze the Chinese model of economic development which was devised by a renowned economist of Singapore. Basic thrust of Chinese model is on high grade infrastructure development (basic engine of growth), strict control on population explosion and promotion of exports. As a result, Indian Govt. needs to develop a somewhat similar model to get out of the economic morass and eradicate poverty. If this transformation does not take place this time, then it may never take place in the future as well (Abhi Nahi to Kabhi Nahi) as people have lost faith in other political parties to take the country ahead as they mostly consist of brokers and usurpers of powers. Consequently, this period is the most critical in the economic history of India. As a result the PM must recast his strategy and face the burning issues from the front.

India is a vast country both in terms of area and population and ruling her efficiently is a very - very serious affair and can not be governed with thumb rules. Sooner, Mr. Narender Modi reads this writing on the wall the better it will be for his Govt, Party and the country. It goes without saying that PM is a man of very strong determination and only he can transform the economy of the nation provided he is advised properly by the think tank and he listens to that advice. To do so, he will have to wear the mask of both Deng Xiaoping and Sardar Patel both in letter and spirit to lift the country to a higher plane. There is no other shortcut to steer out of the mess, the country is in today.

प्रदुषण विनाशकारी है - पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

जाट भवन चंडीगढ में 24 नवम्बर, 2014 को आजादी के पूर्व के किसान -काश्तकार व मजदूर वर्ग के मशीहा के तौर पर प्रसिद्ध जुझारू नेता दीन बन्धु सर छोटूराम के 133वें जन्मदिवस पर जाट सभा चंडीगढ़ /पंचकूला की समस्त कार्यकारणी के सदस्यों द्वारा दीप प्रवज्जलित करके दीनबन्धु सर छोटू राम की प्रतिमा पर पूष्पार्जलि अर्पित करके श्रद्धा स्वरूप श्रद्धार्जलि दी गई । इस अवसर पर सभा द्वारा हर वर्ष की भांति स्कूली बच्चों के लिये ''प्रदूषण विनाशकारी है'' विषय पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ सभा की वरिष्ट सदस्या, डा0 सरिता मलिक, एच0सी0एस0, ज्वाईन्ट कमीशनर, नगर निगम चंडीगढ द्वारा प्रतियोगी विद्यार्थियों को लेखन सामग्री वितरण करके किया गया ।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुये डा0 सरिता मलिक ने कहा कि इस प्रतियोगिता में चंडीगढ़, पंचकुला, मोहाली व आसपास के विभिन्न स्कुलों के 5०० से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के माध्यम से स्कूली छात्रों को पोस्टर/ड्राइंग में अपनी कला ज्ञान का प्रदर्शन करने के साथ-साथ राष्ट्र की एक ज्वलंत समस्या को अपने विवेक व प्रतिभा द्वारा उजागर करने का अवसर मिलता है। बच्चों में पोस्टर एवं पेटिंग विषय पर उनके बौद्धिक स्तर को जांचने व विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए उनके शैक्षणिक स्तर व क्षमता के अनुसार प्रतियोगिता को तीन श्रेणियों - कक्षा तीसरी से पांचवी तक 'ए' कक्षा छटी से आठवी तक 'बी' व कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक 'सी' श्रेणी में विभाजित किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी श्रेणियों के प्रतियोगियों द्वारा ''प्रदूषण विनाशकारी है'' विषय पर अपनी कला तथा प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया। प्रत्येक श्रेणी में प्रथम, द्वित्तीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर्ता को क्रमश: ४००, ३०० व २०० रूपये का नकद पुरूष्कार व मैरीट सर्टीफिकेट प्रदान किया जाएगा। इसके इलावा प्रत्येक श्रेणी में १००-१०० रूपये के दो सांत्वना पुरूष्कार भी दिए जाएंगें। पुरूष्कार विजेताओं को बंसत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटुराम की 134वीं जयंती समारोह के अवसर पर 24 जनवरी 2015 को जाट भवन पंचकूला में सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक आई0पी0एस0, (सेवानिवृत) ने दीनबन्धु के जीवन दर्शन का उल्लेख करते हुये कहा कि दीन बन्धु सर छोटूराम आजादी से पूर्व किसान - काश्तकार - कामगार के किसान मसीहा माने जाते है जोकि समाज के इन शोसित वर्गों के हित के लिये उनकी आवाज को सदैव बुलन्द करते रहे । उन्होंने मांग की कि राज्य व केन्द्रीय सरकार द्वारा 'दीनबन्धु' के जन्मदिवस को किसान - कामगार के हितो व कल्याण के लिये 'किसान दिवस' के तौर पर मनाया जाना चाहिये और इस दिन राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर समाज के इस कमाऊ व मेहनती वर्ग के उत्थान व कल्याण के लिये किसान-विचार गोष्टियां आयोजित की जानी चाहियें । यह दुर्भागय पूर्ण है कि किसी भी राज्य व केन्द्रीय सरकार द्वारा उनके जन्म दिवस पर कोई भी कार्यक्रम व किसान सेमिनार आयोजित नही किया जाता और न ही पंजाब, हरियाणा, उतरप्रदेश आदि कृषि प्रधान प्रांतों में उनके नाम से कोई चेयर स्थापित की गई है । उन्होंने यह भी मांग की जाट सभा चंडीगढ़ /पंचकूला की तर्ज पर सभी समाजसेवी व सामाजिक संस्थाओं द्वारा इस दिन किसान काश्तकार हितो के लिये सर छोटूराम द्वारा किये गये कार्यो को उजागर करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहियें । इसके साथ ही जनहित के लिये किये गये सर छोटूराम के प्रयासों व उनकी लेखन सामग्री को भी स्कूल पाठयक्रम में शामिल किया जाना चाहियें ताकि उनके किसान-मजदूर हितैषी अथक प्रयासों से शिक्षित युवा वर्ग को मार्ग दर्शन व नई दिशा मिल सके ।

इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता के पोस्टरों की छंटनी, चयन एवं परिणाम तैयार करने के लिए डा0 एम0एस0 मलिक की अगुवाई में एक चयन समिति गठित की गई जिसमें गर्वनमेंट आर्ट कॉलेज सैक्टर 10 चंडीगढ के सेवानिवृत प्रो0 इन्द्रजीत गुप्ता ओर इसी कॉलेज के सहायक प्रोफेसर श्री रवीन्द्र शर्मा व सहायक प्रोफेसर श्रीमति अनिता गुप्ता भी सम्मिलित थे। चयन समिति द्वारा निम्न प्रतियोगियों का पुरूष्कार हेतू चयन किया गया :-

श्रेणी-ए कक्षा तीन से पांचवीं तक

प्रथम विजेता - अनुप कुमार कक्षा ५वीं बी, रा0 उ0 वि0 सैक्टर 32चंडीगढ

द्वितीय विजेता - दिनेश कुमार, कक्षा 4 बी, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

तृतीय विजेता - शीतल, कक्षा 5 बी, शिशु निकेतन स्कूल सै0 43ए चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - सिमरन चौहान, कक्षा 5बी, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 20 चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - प्रिंयका, कक्षा-5 ज्ञानदीप व0 मा0 स्कूल सै0 20 चंडीगढ

श्रेणी बी कक्षा छटी से आठवीं तक

प्रथम विजेता - सागर, कक्षा ८वीं राजकीय उच्च विद्यालय कांसल, चंडीगढ

द्वितीय विजेता - गुरलेन कौर, कक्षा छटी, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

तृतीय विजेता - मोनिका, कक्षा ७वीं रा0व0मा0वि0 सैक्टर 28 बी चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - क्रीतिका डिल्लो, कक्षा ७वीं, गुरू हरकिशन व0 मा0 वि0 सैक्टर 40 चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - अंकित, कक्षा 8वीं, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 18, पंचकूला

श्रेणी-सी कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक

प्रथम विजेता - रोहित, कक्षा 11वीं, रा0मा0व0मा0वि0 सैक्टर 32ह्ी, चंडीगढ

द्वितीय विजेता - जसलीन कौर, कक्षा 10वीं, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

तृतीय विजेता - जसपिन्द्र कौर, कक्षा 10वीं रा0व0मा0वि0 सैक्टर 26ए चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - अंजली, कक्षा 10वीं रा0मा0व0मा0वि0 स0 20 डी, चंडीगढ

सांत्वना पुरूष्कार - दीपक, कक्षा 12वीं रा0मा0व0मा0वि0 सैक्टर 15, चंडीगढ

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह-सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-2654932 फैक्स : 0172-2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।